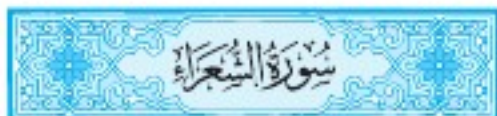


## सूरह शुअरा - 26



### सूरह शुअरा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 227 आयतें हैं

- इस में मक्का के मुर्ति पूजकों के आरोप का खण्डन किया गया है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शायर (कवि) कहते थे। और कवि और नबी के बीच अन्तर बताया गया है।
- इस में धर्म प्रचार के लिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चिन्ता और विरोधियों के आप के साथ उपहास की चर्चा है।
- इस में मूसा अलैहिस्सलाम तथा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एकेश्वरवाद के उपदेश को प्रस्तुत किया गया है जो उन्होंने अपनी जाति को दिया था।
- इस में कई नबियों के धर्म प्रचार और उन के विरोधियों के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- अनेक युग में नबियों के आने और उन के उपदेश में समानता का भी वर्णन है।
- कुर्आन तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ता, सीन, मीमा।
2. यह प्रकाशमय पुस्तक की आयतें हैं।
3. संभवतः आप अपना प्राण<sup>[1]</sup> खो देने वाले हैं कि वे ईमान लाने वाले नहीं हैं!

طس

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

لَعَلَّكَ بِأَخْرَجَ نَفْسَكَ إِلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ

1 अर्थात् उन के ईमान न लाने के शोक में।

4. यदि हम चाहें तो उतार दें उन पर आकाश से ऐसी निशानी कि उन की गर्दनें उस के आगे झुकी कि झुकी रह जायें<sup>[1]</sup>
5. और नहीं आती है उन के पालनहार अति दयावान् की ओर से कोई नई शिक्षा परन्तु वे उस से मुख फेरने वाले बन जाते हैं।
6. तो उन्होंने ने झुठला दिया, अब उनके पास शीघ्र ही उस की सूचनायें आ जायेंगी जिस का उपहास वे कर रहे थे।
7. और क्या उन्होंने ने धरती की ओर नहीं देखा कि हम ने उस में उगाई है बहुत सी प्रत्येक प्रकार की अच्छी वनस्पतियाँ?
8. निश्चय ही इस में बड़ी निशानी (लक्षण)<sup>[2]</sup> है। फिर उन में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
9. तथा वास्तव में आप का पालनहार ही प्रभुत्वशाली अति दयावान् है।
10. (उन्हें उस समय की कथा सुनाओ) जब पुकारा आप के पालनहार ने मूसा को, कि जाओ अत्याचारी जाति<sup>[3]</sup> के पास।

إِنْ نَشَأْ نُزِّلْ عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ آيَةً  
فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ①

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمَنِ مُحَدَّثٍ إِلَّا  
كَانُوا عَنْتَهُ مُعْرِضِينَ ②

فَقَدْ كَذَّبُوا إِسْيَاءَ بَيْنَهُمْ أَنْبَأُوا مَا كَانُوا بِه  
يَسْتَهْزِئُونَ ③

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمَا أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ  
شَيْءٍ مَزْجٍ ④

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ⑤

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑥

وَإِذْ نَادَى رَبُّكَ مُوسَى أَنْ ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑦

1 परन्तु ऐसा नहीं किया, क्यों कि दबाव का ईमान स्वीकार्य तथा मान्य नहीं होता।

2 अर्थात् अल्लाह के सामर्थ्य की।

3 यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) दस वर्ष मद्यन में रह कर मिस्र वापिस आ रहे थे।

11. फिरऔन की जाति के पास, क्या वे डरते नहीं?
12. उस ने कहा: मेरे पालनहार वास्तव में मुझे भय है कि वह मुझे झुठला देंगे।
13. और संकुचित हो रहा है मेरा सीना, और नहीं चल रही है मेरी जुबान, अतः वही भेज दे हारून की ओर (भी)।
14. और उन का मुझ पर एक अपराध भी है। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार डालेंगे।
15. अल्लाह ने कहा: कदापि ऐसा नहीं होगा। तुम दोनों हमारी निशानियाँ ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने<sup>[1]</sup> वाले हैं।
16. तो तुम दोनों जाओ, और कहो कि हम विश्व के पालनहार के भेजे हुये (रसूल) हैं।
17. कि तू हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे।
18. (फिरऔन ने) कहा: क्या हम ने तेरा पालन नहीं किया है अपने यहाँ बाल्यवस्था में, और तू रहा है हम में अपनी आयु के कई वर्ष?
19. और तू कर गया वह कार्य<sup>[2]</sup> जो किया, और तू कृतघ्नों में से है।

قَوْمٌ فَارِعُونَ الْآيَتُونَ ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝

وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَى هَارُونَ ۝

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝

قَالَ كَلَّا فَاذْهَبْ بِآيَاتِنَا إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ ۝

فَاتَيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

إِنْ أَرِيسَ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ

قَالَ أَلَمْ نُزَكِّهِمْ فِينَا وَلَيْدًا وَلَيْسَتْ فِينَا مِنْ عُمَرَاؤِ سِينِينَ ۝

وَفَعَلْتَ فَعَلْتِكَ الْبَقِيَّ فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝

1 अर्थात् तुम दोनों की सहायता करते रहेंगे।

2 यह उस हत्या काण्ड की ओर संकेत है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) से नबी होने से पहले हो गया था। (देखिये: सूरह कसस)



20. (मूसा ने) कहा: मैं ने ऐसा उस समय कर दिया, जब कि मैं अनजान था।
21. फिर मैं तुम से भाग गया जब तुम से भय हुआ। फिर प्रदान कर दिया मुझे मेरे पालनहार ने तत्वदर्शिता और मुझे बना दिया रसूलों में से।
22. और यह कोई उपकार है जो तू मुझे जता रहा है कि तू ने दास बना लिया है इस्राईल के पुत्रों को।
23. फिरऔन ने कहा: विश्व का पालनहार क्या है?
24. (मूसा ने) कहा: आकाशों तथा धरती और उसका पालनहार जो कुछ दोनों के बीच है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो।
25. उस ने उन से कहा जो उस के आस पास थे: क्या तुम सुन नहीं रहे हो?
26. (मूसा ने) कहा: तुम्हारा पालनहार तथा तुम्हारे पूर्वजों का पालनहार है।
27. (फिरऔन ने) कहा: वास्तव में तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है पागल है।
28. (मूसा ने) कहा: वह, पूर्व तथा पश्चिम, तथा दोनों के मध्य जो कुछ है सब का पालनहार है।
29. (फिरऔन ने) कहा। यदि तू ने कोई पूज्य बना लिया मेरे अतिरिक्त, तो तुझे बंदियों में कर दूँगा।

قَالَ فَعَلْتُهَا إِذَا أَنَا مِنَ الصَّالِّينَ ۝

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا  
وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَىٰ أَنْ عَبَّدَتْ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۝

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا أَنْ كُنْتُمْ  
مُؤْمِنِينَ ۝

قَالَ لَيْسَ حَوْلَكَ إِلَّا الْمُسْتَمْعِنُونَ ۝

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ۝

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا أَنْ كُنْتُمْ  
تَعُولُونَ ۝

قَالَ لَبِىَّ اتَّخَذَتِ الْهَاطِلُ يُرَىٰ لَكَ جَلَّتْكَ مِنَ  
الْمَسْجُودِينَ ۝

30. (मूसा ने) कहा: क्या यद्यपि मैं ला दूँ  
तेरे पास एक खुली चीज़?
31. उसने कहा: तू उसे ला दे यदि सच्चा है।
32. फिर उस ने अपनी लाठी को फेंक  
दिया, तो अकस्मात् वह एक प्रत्यक्ष  
अजगर बन गयी।
33. तथा अपना हाथ निकाला तो  
अकस्मात् वह उज्ज्वल था देखने  
वालों के लिये।
34. उस ने अपने प्रमुखों से कहा जो उस  
के पास थे: वास्तव में यह तो बड़ा  
दक्ष जादूगर है।
35. वह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी धरती  
से निकाल<sup>[1]</sup> दे अपने जादू के बल  
से, तो अब तुम क्या आदेश देते हो?
36. सब ने कहा: अवसर (समय) दो मूसा  
और उसके भाई (के विषय) को, और  
भेज दो नगरों में एकत्र करने वालों को।
37. वह तुम्हारे पास प्रत्येक बड़े दक्ष  
जादूगर को लायें।
38. तो एकत्र कर लिये गये जादूगर एक  
निश्चित दिन के समय के लिये।
39. तथा लोगों से कहा गया कि क्या तुम  
एकत्र होने वाले<sup>[2]</sup> हो?
40. ताकि हम पीछे चलें जादूगरों के यदि  
वही प्रभुत्वशाली (विजयी) हो जायें।

قَالَ أَوْ لَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ۝

قَالَ فَأْتِ بِهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝

فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۝

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضٌ لِلنَّظَرِیْنَ ۝

قَالَ لِلْمَلَآئِكَةِ إِنَّ هَٰذَا السَّحَرُ عَلِيمٌ ۝

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِ فَمَاذَا  
تَأْمُرُونَ ۝

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَبْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حٰثِرِیْنَ ۝

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَابٍ عَلِيمٍ ۝

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِبِیْقَاتِ یَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُّجْتَمِعُونَ ۝

لَعَلَّكَانَا نَنْبِیُّ السَّحَرَةِ إِنْ كَانُوا هُمُ الْغَالِبِیْنَ ۝

1 अर्थात् यह उग्रवाद कर के हमारे देश पर अधिकार कर ले।

2 अर्थात् लोगों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस प्रतियोगिता में अवश्य उपस्थित हों।

41. और जब जादूगर आये, तो फिरऔन से कहा: क्या हमें कुछ पुरस्कार मिलेगा यदि हम ही प्रभुत्वशाली होंगे?
42. उसने कहा: हाँ, और तुम उस समय (मेरे) समीपवर्तियों में हो जाओगे।
43. मूसा ने उन से कहा: फेंको जो कुछ तुम फेंकने वाले हो।
44. तो उन्होंने ने फेंक दी अपनी रस्सियाँ तथा अपनी लाठियाँ, तथा कहा: फिरऔन के प्रभुत्व की शपथ! हम ही अवश्य प्रभुत्वशाली (विजयी) होंगे।
45. अब मूसा ने फेंक दी अपनी लाठी, तो तत्क्षण वह निगलने लगी जो झूठ वह बना रहे थे।
46. तो गिर गये सभी जादूगर<sup>[1]</sup> सज्दा करते हुये।
47. और सब ने कह दिया: हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।
48. मूसा तथा हारून के पालनहार पर।
49. (फिरऔन ने) कहा: तुम उस का विश्वास कर बैठे इस से पहले कि मैं तुम्हें आज्ञा दूँ? वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा (गुरु) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, तो तुम्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा, मैं अवश्य तुम्हारे हाथों तथा पैरों को विपरीत दिशा<sup>[2]</sup> से काट दूँगा।

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَإِنَّا لَمَّا كُنَّا لَكَ خُفَاةً

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝

قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلقُونَ ۝

فَالْقَوَاعِبُ آلِهَهُمْ وَعَصِيَّتُهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ۝

فَألقى مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝

فَألقى السَّحَرَةُ سُجُودًا ۝

قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝

قَالَ امْنُمُّ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَىٰ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ فَلَا تَقْطَعْنَ أَيِّدِيكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلْتِكُمْ أَجْصَعِينَ ۝

1 क्यों कि उन्हें विश्वास हो गया कि मूसा (अलैहिस्सलाम) जादूगर नहीं, बल्कि वह सत्य के उपदेशक हैं।

2 अर्थात् दायों हाथ और बायों पैर या बायों हाथ और दायों पैर।



तथा तुम सभी को फाँसी दे दूंगा।

50. सब ने कहा: कोई चिन्ता नहीं, हम तो अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।

51. हम आशा रखते हैं कि क्षमा कर देगा हमारे लिये हमारा पालन-हार हमारे पापों को क्यों कि हम सब से पहले ईमान लाने वाले हैं।

52. और हम ने मूसा की ओर वही की, कि रातों - रात निकल जा मेरे भक्तों को ले कर, तुम सब का पीछा किया जायेगा।

53. तो फिरऔन ने भेज दिया नगरों में (सेना) एकत्र करने <sup>[1]</sup> वालों को।

54. कि वह बहुत थोड़े लोग हैं।

55. और (इस पर भी) वह हमें अति क्रोधित कर रहे हैं।

56. और वास्तव में हम एक गिरोह हैं सावधान रहने वाले।

57. अन्ततः हम ने निकाल दिया उन को बागों तथा स्रोतों से।

58. तथा कोषों और उत्तम निवास स्थानों से।

59. इसी प्रकार हुआ, और हम ने उन का उत्तराधिकारी बना दिया इस्राईल की संतान को।

قَالُوا لَاضْيِرُاْنَا اِلٰى رَبِّنَا مُنْعَلِبِيْنَ ۝

اِنَّا نَظْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيْئَاتِنَا اِنَّ كُنَّا اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

وَاَوْحَيْنَا اِلٰى مُوسٰى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ اِنَّكُمْ تَبْعُوْنَ ۝

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَائِنِ خٰشِرِيْنَ ۝

اِنَّ هٰؤُلَاءِ لَشُرٰٓذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۝

وَالَهُمْ لَنَا لَعَنَظُوْنَ ۝

وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۝

فَاَخْرَجْنَاهُمْ مِّنْ جَنَّتِ وَيَعْيُوْنَ ۝

وَكُنُوْا مَقَامِرِكُرْبٰى ۝

كَذٰلِكَ وَاَوْرَثْنَاهَا بَنِيْ اِسْرٰٓءِيْلَ ۝

1 जब मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के आदेशानुसार अपने साथियों को ले कर निकल गये तो फिरऔन ने उन का पीछा करने के लिये नगरों में हरकारे भेजे।

60. तो उन्होंने ने उनका पीछा किया प्रातः होते ही।

فَاتَّبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ ۝

61. और जब दोनों गिरोहों ने एक दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा: हम तो निश्चय ही पकड़ लिये<sup>[1]</sup> गये।

فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَمْعَيْنِ قَالَ اصْطَبْ مُوسَى إِنَّا لَمُدْرِكُونَ ۝

62. (मूसा ने) कहा: कदापि नहीं, निश्चय मेरे साथ मेरा पालनहार है।

قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝

63. तो हम ने मूसा को वही की, कि मार अपनी लाठी से सागर को, अकस्मात् सागर फट गया, तथा प्रत्येक भाग भारी पर्वत के समान<sup>[2]</sup> हो गया।

فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ۝

64. तथा हमने समीप कर दिया उसी स्थान के दूसरे गिरोह को।

وَأَزَلْنَاهُمْ إِلَى الْآخِرِينَ ۝

65. और मुक्ति प्रदान कर दी मूसा और उसके सब साथियों को।

وَلَجَّيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ آجْمُعِينَ ۝

66. फिर हमने डुबो दिया दूसरों को।

لَمَّا غَرَقْنَا الْآخِرِينَ ۝

67. वास्तव में इस में बड़ी शिक्षा है, और उन में से अधिकतर लोग ईमान वाले नहीं थे।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝

68. तथा वास्तव में आप का पालनहार निश्चय अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

69. तथा आप उन्हें सुना दें इब्राहीम का समाचार (भी)।

وَأَتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ۝

70. जब उस ने कहा: अपने बाप तथा

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۝

1 क्यों कि अब सामने सागर और पीछे फिरौन की सेना थी।

2 अर्थात् बीच से मार्ग बन गया और दोनों ओर पानी पर्वत के समान खड़ा हो गया।



अपनी जाति से कि तुम क्या पूज रहे हो?

71. उन्होंने ने कहा: हम मूर्तियों की पूजा कर रहे हैं और उन्हीं की सेवा में लगे रहते हैं।

72. उसने काह: क्या वे तुम्हारी सुनती हैं जब पुकारते हो?

73. या तुम्हें लाभ पहुँचाती या हानि पहुँचाती है?

74. उन्होंने ने कहा: बल्कि हम ने अपने पूर्वजों को इसी प्रकार करते हुये पाया है।

75. उस ने कहा: क्या तुम ने कभी (आँख खोल कर) उसे देखा जिसे तुम पूज रहे हो।

76. तुम तथा तुम्हारे पहले पूर्वज?

77. क्यों कि यह सब मेरे शत्रु हैं पूरे विश्व के पालनहार के सिवा।

78. जिस ने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझे मार्ग दर्शा रहा है।

79. और जो मुझे खिलाता और पिलाता है।

80. और जब रोगी होता हूँ तो वही मुझे स्वस्थ करता है।

81. तथा वही मुझे मारेगा फिर<sup>[1]</sup> मुझे जीवित करेगा।

82. तथा मैं आशा रखता हूँ कि क्षमा

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَانًا فَنَنْظُرُ لَهَا غَلْبِينَ ۝

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمُ إِذْ تَدْعُونَ ۝

أَوْ يَنْفَعُوكُمْ أَوْ يُضَرُّونَ ۝

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ۝

قَالَ أَقْرَبُكُمْ مَنَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۝

أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ الْأَقْدَمُونَ ۝

فَالَهُمْ عَذَابٌ لِّيَ الْآرَبُ الْعَالَمِينَ ۝

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۝

وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ۝

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ۝

وَالَّذِي يُبَيِّتُنِي ثُمَّ يُنَحِّيُنِي ۝

وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ۝

1 अर्थात प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये ।

कर देगा मेरे लिये मेरे पाप प्रतिकार  
(प्रलय) के दिन।

83. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर दे मुझे  
तत्त्वदर्शिता और मुझे सम्मिलित कर  
सदाचारियों में।

84. और मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर  
आगामी लोगों में।

85. और बना दे मुझ को सुख के स्वर्ग  
का उत्तराधिकारी।

86. तथा मेरे बाप को क्षमा कर दे<sup>[1]</sup>  
वास्तव में वह कुपथों में है।

87. तथा मुझे निरादर न कर जिस दिन  
सब जीवित किये जायेंगे<sup>[2]</sup>।

88. जिस दिन लाभ नहीं देगा कोई धन  
और न संतान।

89. परन्तु जो अल्लाह के पास स्वच्छ  
दिल ले कर आयेगा।

90. और समीप कर दी जायेगी स्वर्ग  
आज्ञाकारियों के लिये।

91. तथा खोल दी जायेगी नरक कुपथों  
के लिये।

92. तथा कहा जायेगा: कहाँ है वह जिन्हें  
तुम पूज रहे थे?

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَارْحَمْنِي بِالضَّالِّينَ ۝

وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ۝

وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ۝

وَاعْفُ عَنِّي إِنَّكَ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ۝

يَوْمَ لَا يُنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ۝

إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝

وَأَنزَلَتْ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝

وَبَرَزَتْ الْجحيمُ لِلْعَافِينَ ۝

وَقِيلَ لَهُمْ أَيُّكُمْ تَعْبُدُونَ ۝

1 ( देखिये: सूरह तौबा, आयत: 114)

2 हदीस में वर्णित है कि प्रलय के दिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बाप से मिलेंगे। और कहेंगे: हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे वचन दिया था कि मुझे पुनः जीवित होने के दिन अपमानित नहीं करेगा। तो अल्लाह कहेगा: मैं ने स्वर्ग को काफिरों के लिये अवैध कर दिया है। (सहीह बुखारी, 4769)

93. अल्लाह के सिवा, क्या वह तुम्हारी सहायता करेंगे अथवा स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं?
94. फिर उस में औधे झोंक दिये जायेंगे वह और सभी कुपथ।
95. और इब्लीस की सेना सभी।
96. और वह उस में आपस में झगड़ते हुये कहेंगे:
97. अल्लाह की शपथ! वास्तव में हम खुले कुपथ में थे।
98. जब हम तुम्हें बराबर समझ रहे थे विश्व के पालनहार के।
99. और हमें कुपथ नहीं किया परन्तु अपराधियों ने।
100. तो हमारा कोई अभिस्तावक (सिफारशी) नहीं रह गया।
101. तथा न कोई प्रेमी मित्र।
102. तो यदि हमें पुनः संसार में जाना होता<sup>[1]</sup> तो हम ईमान वालों में हो जाते।
103. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है। और उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
104. और वास्तव में आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली<sup>[2]</sup> दयावान् है।

مِنْ دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنْصُرُونَكَ أَوْ يَنْصَرُونَ ۝

كَلْبِكُمْ فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ۝

وَجُنُودِ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ۝

قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ۝

تَاللَّهِ إِنَّ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

إِذْ تَسْتَوِيكُمْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

وَمَا أَضَلُّكُمْ إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ۝

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ۝

وَلَا صِدْقٍ حِينٍ ۝

فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةٌ فَنَتُخَرُّ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

إِنْ فِي ذَلِكَ آيَةٌ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

1 इस आयत में संकेत है कि संसार में एक ही जीवन कर्म के लिये मिलता है। और दूसरा जीवन प्रलोक में कर्मों के फल के लिये मिलेगा।

2 परन्तु लोग स्वयं अत्याचार कर के नरक के भागी बन रहे हैं।



105. नूह की जाति ने भी रसूलों को झुठलाया।  
كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾
106. जब उन से उन के भाई नूह ने कहा: क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो?  
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾
107. वास्तव में मैं तुम्हारे लिये एक <sup>[1]</sup> रसूल हूँ।  
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾
108. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी बात मानो।  
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا عَمَلَكُمْ ﴿١٠٨﴾
109. मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।  
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾
110. अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।  
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا عَمَلَكُمْ ﴿١١٠﴾
111. उन्होंने ने कहा: क्या हम तुझे मान लें, जब कि तेरा अनुसरण पतित (नीच) लोग <sup>[2]</sup> कर रहे हैं।  
قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾
112. (नूह ने) कहा: मुझे क्या ज्ञान कि वे क्या कर्म करते रहे हैं?  
قَالَ وَمَا عَلَيَّ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾
113. उन का हिसाब तो बस मेरे पालनहार के ऊपर है यदि तुम समझो।  
إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾
114. और मैं धुतकारने वाला <sup>[3]</sup> नहीं हूँ ईमान वालों को।  
وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾

1 अल्लाह का संदेश बिना कमी और अधिक्ता के तुम्हें पहुँचा रहा हूँ।

2 अर्थात् धनी नहीं, निर्धन लोग कर रहे हैं।

3 अर्थात् मैं हीन वर्ग के लोगों को जो ईमान लाये हैं अपने से दूर नहीं कर सकता जैसा कि तुम चाहते हो।

115. मैं तो बस खुला सावधान करने वाला हूँ  
 116. उन्होंने ने कहा: यदि रुका नहीं, हे नूह! तो तू अवश्य पथराव कर के मारे हुये मैं होगा।  
 117. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरी जाति ने मुझे झुठला दिया।  
 118. अतः तू निर्णय कर दे मेरे और उनके बीच, और मुक्त कर दे मुझ को तथा जो मेरे साथ है ईमान वालों में से।  
 119. तो हम ने उसे मुक्त कर दिया तथा जो उसके साथ भरी नाव में थे।  
 120. फिर हम ने डुबो दिया उस के पश्चात् शेष लोगों को।  
 121. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है, तथा उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।  
 122. और निश्चय आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।  
 123. झुठला दिया आद (जाति) ने (भी) रसूलों को।  
 124. जब कहा उन से उनके भाई हूद<sup>[1]</sup> ने: क्या तुम डरते नहीं हो?  
 125. वस्तुतः मैं तुम्हारे लिये एक न्यासिक (अमानतदार) रसूल हूँ।  
 126. अतः अल्लाह से डरो और मेरा

إِن أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾

قَالُوا لَيْسَ لَكَ بِهٖ يَوْمَ لَتَاكُم مِّنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾

فَأَقِمْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

فَأَنجَيْنَاهُ وَمَنْ مَّعَهُ فِي الْفُلِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾

ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾

كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾

إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

1 आद जाति के नबी हूद (अलैहिस्सलाम) को उन का भाई कहा गया है क्यों कि वह भी उन्हीं के समुदाय में से थे।

अनुपालन करो।

127. और मैं तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
128. क्यों तुम बना लेते हो हर ऊँचे स्थान पर एक यादगार भवन व्यर्थ में।
129. तथा बनाते हो बड़े-बड़े भवन जैसे कि तुम सदा रहोगे।
130. और जब किसी को पकड़ते हो तो पकड़ते हो महा अत्याचारी बन कर।
131. तो अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।
132. तथा उस से भय रखो जिस ने तुम्हारी सहायता की है उस से जो तुम जानते हो।
133. उस ने सहायता की है तुम्हारी चौपायों तथा संतान से।
134. तथा बागों (उद्यानों) तथा जल स्रोतों से।
135. मैं तुम पर डरता हूँ भीषण दिन की यातना से।
136. उन्होंने ने कहा: नसीहत करो या न करो, हम पर सब समान है।
137. यह बात तो बस प्राचीन लोगों की नीति<sup>[1]</sup> है।
138. और हम उन में से नहीं हैं जिन को

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ  
الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلَدُونَ ﴿١٢٩﴾

وَإِذَا بَطِشْتُمْ بَطِشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا أَمْرَهُ

وَاتَّقُوا الْيَوْمَ الَّذِي أَنْتُمْ مَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾

أَمْ كُنتُمْ بِأَنْعَامٍ بَينِينَ ﴿١٣٢﴾

وَجَنَّتِ وَعْيُونُ ﴿١٣٣﴾

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣٤﴾

قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَصْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ  
الْوَعَّظِينَ ﴿١٣٥﴾

إِنْ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣٦﴾

وَمَنْ نَعْنُ بِمُعَدِّينَ ﴿١٣٧﴾

1 अर्थात् प्राचीन युग से होती चली आ रही है।



यातना दी जायेगी।

139. अन्ततः उन्होंने ने हमें झुठला दिया तो हम ने उन्हें ध्वस्त कर दिया। निश्चय इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और लोगों में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

140. और वास्तव में आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

141. झुठला दिया समूद ने भी<sup>(1)</sup> रसूलों को।

142. जब कहा, उन से उनके भाई सालेह ने: क्या तुम डरते नहीं हो?

143. वास्तव में, मैं तुम्हारा विश्वासनीय रसूल हूँ।

144. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो।

145. तथा मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई परिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

146. क्या तुम छोड़ दिये जाओगे उस में जो यहाँ है निश्चिन्त रह कर?

147. बागों तथा स्रोतों में।

148. तथा खेतों और खजूरों में जिन के गुच्छे रस भरे हैं।

149. तथा तुम पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो गर्व करते हुये।

فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾

كَذَّابَتْ سَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ طَيْمٌ الْاَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١٤٤﴾

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عِلَّ رَيْتَ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٥﴾

أَتُرْكُونَ فِي مَا هُمْ بِأَمِينٍ ﴿١٤٦﴾

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾

وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾

وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا لِزِينَةٍ ﴿١٤٩﴾

1 यहाँ यह बात याद रखने की है कि एक रसूल का इन्कार सभी रसूलों का इन्कार है क्यों कि सब का उपदेश एक ही था।

150. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।
151. और पालन न करो उल्लंघनकारियों के आदेश का।
152. जो उपद्रव करते हैं धरती में और सुधार नहीं करते।
153. उन्होंने ने कहा: वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।
154. तू तो बस हमारे समान एक मानव है। तो कोई चमत्कार ला दे, यदि तू सच्चा है।
155. कहा: यह ऊँटनी है<sup>[1]</sup> इस के लिये पानी पीने का एक दिन है और तुम्हारे लिये पानी लेने का निश्चित दिन है।
156. तथा उसे हाथ न लगाना बुराई से, अन्यथा तुम्हें पकड़ लेगी एक भीषण दिन की यातना।
157. तो उन्होंने ने बध कर दिया उसे, अन्ततः पछताने वाले हो गये।
158. और पकड़ लिया उन्हें यातना ने। वस्तुतः इस में बड़ी निशानी है, और नहीं थे उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले।
159. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
160. झुठला दिया लूत की जाति ने (भी) रसूलों को।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا<sup>١</sup>

وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ<sup>٢</sup>

الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ<sup>٣</sup>

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ<sup>٤</sup>

مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ<sup>٥</sup>

قَالَ هَذِهِ نَاقَةُ آلِهَاشِرْبُكُمْ وَلَكُمْ بِشَرْبِ يَوْمٍ مَعْلُومٍ<sup>٦</sup>

وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيمٍ<sup>٧</sup>

فَعَرَّوْهَا فَاصْبَحُوا نَادِمِينَ<sup>٨</sup>

فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ<sup>٩</sup>

أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ<sup>١٠</sup>

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ<sup>١١</sup>

كَذَّبَ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ<sup>١٢</sup>

1 अर्थात यह ऊँटनी चमत्कार है जो उन की माँग पर पत्थर से निकली थी।

161. जब कहा उन से उन के भाई लूत ने: क्या तुम डरते नहीं हो?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾

162. वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾

163. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١٦٣﴾

164. और मैं तुम से प्रश्न नहीं करता इस पर किसी पारिश्रमिक (बदले) का। मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَمَرْتُ إِلَّا عِلَّ رِبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾

165. क्या तुम जाते<sup>[1]</sup> हो पुरुषों के पास संसार वासियों में से?

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾

166. तथा छोड़ देते हो जिसे पैदा किया है तुम्हारे पालनहार ने अर्थात् अपनी पत्नियों को, बल्कि तुम एक जाति हो सीमा का उल्लंघन करने वाली।

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَنْفُسَكُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾

167. उन्होंने ने कहा: यदि तू नहीं रुका, हे लूत! तो अवश्य तेरा बहिष्कार कर दिया जायेगा।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ لَنُلَوِّطَنَّ لَكَ وَمَا يُنَاصِيكَ كَذِبًا ﴿١٦٧﴾

168. उस ने कहा: वास्तव में मैं तुम्हारे कर्तूत से बहुत अप्रसन्न हूँ।

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾

169. मेरे पालनहार! मुझे बचा ले तथा मेरे परिवार को उस से जो बह कर रहे हैं।

رَبِّ يَحْيَىٰ وَأَهْلِي وَمَنْ يَتَعَلَّمُونَ ﴿١٦٩﴾

170. तो हम ने उसे बचा लिया तथा उस के सभी परिवार को।

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾

1 इस कुकर्म का आरंभ संसार में लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति से हुआ। और अब यह कुकर्म पूरे विश्व में विशेष रूप से यूरोपीय सभ्य देशों में व्यापक है। और समलैंगिक विवाह को यूरोप के बहुत से देशों में वैध मान लिया गया है। जिस के कारण कभी भी उन पर अल्लाह की यातना आ सकती है।



171. परन्तु एक बुढ़िया<sup>[1]</sup> को जो पीछे रह जाने वालों में थी।  
إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ﴿١٧١﴾
172. फिर हम ने विनाश कर दिया दूसरों का।  
ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٧٢﴾
173. और वर्षा की उन पर एक घोर<sup>[2]</sup> वर्षा। तो बुरी हो गई डराये हुये लोगों की वर्षा।  
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴿١٧٣﴾
174. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और उन में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे।  
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧٤﴾
175. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।  
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٧٥﴾
176. झुठला दिया ऐय्का<sup>[3]</sup> वालों ने रसूलों को।  
كَذَّبَ أَصْحَابُ الْمَيْمَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٦﴾
177. जब कहा, उन से शुऐब ने: क्या तुम डरते नहीं हो?  
إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾
178. मैं तुम्हारे लिये एक विश्वासनीय रसूल हूँ।  
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٨﴾
179. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी आज्ञा का पालन करो।  
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ﴿١٧٩﴾
180. और मैं नहीं माँगता तुम से इस पर कोई पारिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक तो बस समस्त विश्व के पालनहार पर है।  
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْتَأْتُمُونِي إِلَّا عَلَىٰ رَيْبٍ الْعَالِينَ ﴿١٨٠﴾

1 इस से अभिप्रेत लूत (अलैहिस्सलाम) की काफिर पत्नी है।

2 अर्थात् पत्थरों की वर्षा। (देखिये: सूरह हूद, आयत: 82 - 83)

3 ऐय्का का अर्थ झाड़ी है। यह मद्यन का क्षेत्र है जिस में शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भेजा गया था।

181. तुम नाप-तौल पूरा करो, और न बनो कम देने वालों में।

182. और तौलो सीधे तराजू से।

183. और मत कम दो लोगों को उन की चीजें, और मत फिरो धरती में उपद्रव फैलाते।

184. और डरो उस से जिस ने पैदा किया है तुम्हें तथा अगले लोगों को।

185. उन्होंने ने कहा: वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।

186. और तू तो बस एक पुरुष<sup>[1]</sup> है हमारे समान। और हम तो तुझे झूठों में समझते हैं।

187. तो हम पर गिरा दे कोई खण्ड आकाश का यदि तू सच्चा है।

188. उस ने कहा: मेरा पालनहार भली प्रकार जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝

وَزِنُوا بِالْقِسْطِ أَسْبَغِ الْمُسْتَقِيمِ ۝

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْحَيَلَةَ الْأُولَىٰ ۝

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ السَّخِرِينَ ۝

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِنْ نَطَّلُكَ لَإِنَّا الْكَذِبِينَ ۝

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

1 यहाँ यह बात विचारणीय है कि सभी विगत जातियों ने अपने रसूलों को उन के मानव होने के कारण नकार दिया। और जिस ने स्वीकार भी किया तो उस ने कुछ युग व्यतीत होने के पश्चात अति कर के अपने रसूलों को प्रभु अथवा प्रभु का अंश बना कर उन्हीं को पूज्य बना लिया। तथा ऐकेश्वरवाद को कड़ा आधात पहुँचा कर मिश्रणवाद का द्वार खोल लिया और कुपथ हो गये। वर्तमान युग में भी इसी का प्रचलन है और इस का आधार अपने पूर्वजों की रीतियों को बनाया जाता है। इस्लाम इसी कुपथ का निवारण कर के ऐकेश्वरवाद की स्थापना के लिये आया है और वास्तव में यही सत्धर्म है।

हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मुझे वैसे न बढ़ा चढ़ाना जैसे ईसाईयों ने मर्यम के पुत्र (ईसा) को बढ़ा चढ़ा दिया। वास्तव में मैं उस का दास हूँ। अतः मुझे अल्लाह का दास और उस का रसूल कहो। (देखिये: सहीह बुखारी, 3445)

189. तो उन्होंने ने उसे झुठला दिया।  
अन्ततः पकड़ लिया उन्हें छाया के<sup>[1]</sup>  
दिन की यातना ने। वस्तुतः वह एक  
भीषण दिन की यातना थी।
190. निश्चय इस में एक बड़ी निशानी  
(शिक्षा) है। और नहीं थे उन में  
अधिकतर ईमान लाने वाले।
191. और वास्तव में आप का पालनहार  
ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
192. तथा निःसंदेह यह (कुर्आन) पूरे विश्व  
के पालनहार का उतारा हुआ है।
193. इसे ले कर रूहुल अमीन<sup>[2]</sup> उतरा।
194. आप के दिल पर ताकि आप हो  
जायें सावधान करने वालों में।
195. खुली अर्बी भाषा में।
196. तथा इस की चर्चा<sup>[3]</sup> अगले रसूलों  
की पुस्तको में (भी) है।
197. क्या और उन के लिये यह निशानी  
नहीं है कि इस्राईलियों के विद्वान<sup>[4]</sup>

فَلَذَّبُوهُ فَاتَّخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظَّلَاةِ إِنَّهُ كَانَ  
عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

وَلَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

تَوَلَّى بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ۝

عَلَّ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ۝

بِلِسَانٍ عَرَبٍ مُبِينٍ ۝

وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ۝

أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةٌ أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۝

- 1 अर्थात् उनकी यातना के दिन उन पर बादल छा गया। फिर आग बरसने लगी और धरती कंपित हो गई। फिर एक कड़ी ध्वनी ने उन की जाने ले ली। (इब्ने कसीर)
- 2 रूहुल अमीन से अभिप्राय आदरणीय फ़रिश्ता जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है। जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अल्लाह की ओर से वही लेकर उतरते थे जिस के कारण आप रसूलों की और उन की जातियों की दशा से अवगत हुये। अतः यह आप के सत्य रसूल होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।
- 3 अर्थात् सभी आकाशीय ग्रन्थों में अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन तथा आप पर पुस्तक कुर्आन के अवतरित होने की भविष्यवाणी की गई है। और सब नबियों ने इस की शुभ सूचना दी है।
- 4 बनी इस्राईल के विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि



इसे जानते हैं।

198. और यदि हम इसे उतार देते किसी अजमी<sup>[1]</sup> पर।

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ۝

199. और वह इसे उन के समक्ष पढ़ता तो वह उस पर ईमान लाने वाले न होते<sup>[2]</sup>।

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۝

200. इसी प्रकार हम ने घुसा दिया है इस (कुर्आन के इन्कार) को पापियों के दिलों में।

كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝

201. वह नहीं ईमान लायेंगे उस पर जब तक देख न लेंगे दुःख दायी यातना।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝

202. फिर उन पर सहसा आ जायेगी और वह समझ भी नहीं पायेंगे।

فَبِأَيِّهِمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

203. तो कहेंगे: क्या हमें अवसर दिया जायेगा?

فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ ۝

204. तो क्या वह हमारी यातना की जल्दी मचा रहे हैं?

أَفَبَعْدَ إِثْنَائِمَا سَجَدْنَا ۝

205. (हे नबी!) तो क्या आप ने विचार किया कि यदि हम लाभ पहुँचायें इन्हें वर्षों।

أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ۝

206. फिर आ जाये उन पर जिस की उन्हें धमकी दी जा रही थी।

ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

207. तो क्या काम आयेगा उनके जो

مَا آغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَسْتَعْوُونَ ۝

वसल्लम और कुर्आन पर ईमान लाये वह इस के सत्य होने का खुला प्रमाण है।

1 अर्थात् ऐसे व्यक्ति पर जो अरब देश और जाति के अतिरिक्त किसी अन्य जाति का हो।

2 अर्थात् अर्बी भाषा में न होता तो कहते कि यह हमारी समझ में नहीं आता। (देखिये: सूरह, हा, मीम, सज्दा, आयत: 44)

उन्हें लाभ पहुँचाया जाता रहा?

208. और हम ने किसी बस्ती का विनाश नहीं किया परन्तु उस के लिये सावधान करने वाले थे।

209. शिक्षा देने के लिये, और हम अत्याचारी नहीं हैं।

210. तथा नहीं उतरे हैं (इस कुआँन) को ले कर शैतान।

211. और न योग्य है उन के लिये और न वह इस की शक्ति रखते हैं।

212. वास्तव में वह तो (इस के) सुनने से भी दूर<sup>[1]</sup> कर दिये गये हैं।

213. अतः आप न पुकारें अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को अन्यथा आप दण्डितों में हो जायेंगे।

214. और आप सावधान कर दें अपने समीपवर्ती<sup>[2]</sup> सम्बन्धियों को।

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ۝

ذِكْرَىٰ تَذَكَّرْنَا لِلظَّالِمِينَ ۝

وَمَا تَزَكَّىٰ بِهِ الشَّيْطَانُ ۝

وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۝

إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعَزُونَ ۝

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا الْخَرَفَتُكَ مِنَ الْمُعَذِّبِينَ ۝

وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۝

1 अर्थात् इस के अवतरित होने के समय शैतान आकाश की ओर जाते हैं तो उल्का उन्हें भस्म कर देते हैं।

2 आदरणीय इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि जब यह आयत उतरी तो आप सफ़ा पर्वत पर चढ़े। और कुरैश के परिवारों को पुकारा। और जब सब एकत्र हो गये, और जो स्वयं नहीं आ सका तो उस ने किसी प्रतिनिधि को भेज दिया। और अबू लहब तथा कुरैश आ गये तो आप ने फ़रमाया: यदि मैं तुम से कहूँ कि उस वादी में एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने वाली है, तो क्या तुम मुझे सच्चा मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने आप को सदा ही सच्चा पाया है। आप ने कहा: मैं तुम्हें आगामी कड़ी यातना से सावधान कर रहा हूँ। इस पर अबू लहब ने कहा: तेरा पूरे दिन नाश हो! क्या हमें इसी के लिये एकत्र किया है? और इसी पर सूरह लहब उतरी। (सहीह बुख़ारी, 4770)

215. और झुका दें अपना बाहु<sup>[1]</sup> उसके लिये जो आप का अनुयायी हो ईमान वालों में से।

216. और यदि वह आप की अवज्ञा करें तो आप कह दें कि मैं निर्दोष हूँ उस से जो तुम कर रहे हो।

217. तथा आप भरोसा करें अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् पर।

218. जो देखता है आप को जिस समय (नमाज़ में) खड़े होते हैं।

219. और आप के फिरने को सज्दा करने<sup>[2]</sup> वालों में।

220. निःसंदेह वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

221. क्या मैं तुम सब को बताऊँ कि किस पर शैतान उतरते हैं?

222. वे उतरते हैं प्रत्येक झूठे पापी<sup>[3]</sup> पर।

223. वह पहुँचा देते हैं सुनी-सुनाई बातों को और उन में अधिकतर झूठे हैं।

224. और कवियों का अनुसरण बहके हुये लोग करते हैं।

225. क्या आप नहीं देखते कि वह प्रत्येक

وَخَفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾

الَّذِي يَرِيكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾

وَتَقْلِبُكَ فِي السُّجُودِ ﴿٢١٩﴾

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَا تَكْفُرُونَ الشَّيْطَانُ ﴿٢٢١﴾

تَنْزِيلٌ عَلَىٰ كُلِّ آفَاقٍ نَّازِلٌ ﴿٢٢٢﴾

يَقْلُبُونَ السَّمْعَ وَآكُرُهُمْ كَذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾

وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾

1 अर्थात उस के साथ विनम्रता का व्यवहार करें।

2 अर्थात प्रत्येक समय अकेले हों या लोगों के बीच हों।

3 हदीस में है कि फ़रिश्ते बादल में उतरते हैं, और आकाश के निर्णय की बात करते हैं, जिसे शैतान चोरी से सुन लेते हैं। और ज्योतिषियों को पहुँचा देते हैं। फिर वह उस में सौ झूठ मिलाते हैं। (सहीह बुखारी, 3210)



वादी में फिरते<sup>[1]</sup> हैं।

226. और ऐसी बात कहते हैं जो करते नहीं।

227. परन्तु वह (कवि) जो<sup>[2]</sup> ईमान लाये तथा सदाचार किये और अल्लाह का बहुत स्मरण किया, तथा बदला लिया इस के पश्चात् कि उन के ऊपर अत्याचार किया गया। तथा शीघ्र ही जान लेंगे जिन्होंने अत्याचार किया है कि वह किस दुष्परिणाम की ओर फिरते हैं।

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ  
كَثِيرًا وَأَنصَرُّوا مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا وَسَيَعْلَمُ  
الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنِّي مُنْقَلَبٌ مُنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾

1 अर्थात् कल्पना की उड़ान में रहते हैं।

2 इन से अभिप्रेत हस्सान बिन साबित आदि कवि हैं जो कुरैश के कवियों की भर्त्सना किया करते थे। (देखिये: सहीह बुखारी, 4124)